%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D.)

%%p. 332

No. 189

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Śiṃhāchalam<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 897; A. R. No. 291 of 1899;

I. M. P. Vol. III, P. 1679, No. 119 )

Ś. 1220<2>

(१।) स्वस्ति [।।] श्रीमत् कौशिकसगोत्रः पुत्रो भवपति प्रृभोः [।]

माता यस्य च हीराइ सोयं लक्ष्म-

(२।) णनायकः ।। [१] शाकाब्दे व्योम-चक्षुर्मुज-शशिगंणिते

कार्त्तिके मासि शुक्ल द्वादश्यां सिं-

(३।) हभूभृद्बरशिखरिजुष[ः] श्रीनृसिंहस्य विष्णोः । स्वायु-

र्व्वशाभिवृद्ध्यै वि-

(४।) रचित विलसत् पुष्पमालार्प्पणाय क्रि(कृ)त्वा चंद्रार्क्कतारं

व्यचरयत मुदा

(५।) पुष्पवाटिनिवंद्ध ।। [२] स्वस्ति श्री शकवर्ष[ं] वुलु

१२२० गुनेंट्टि कात्तिक शुक्ल द्वा-

(६।) दशिनांडु कौशिकगोत्रजुडैन भवपतिठक्कुरु कोडुकु

लक्कणनायकुं-

(७।) डु श्रीपाकपुराइनायकुनि चेत रेंडु माडलुन्नु धरणानकु पू-

<1. In the twenty-second niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 18th October 1298 A. D.>

%%p. 333

(८।) पुतोंटनिवंद्धमु क्रयमुगोनि श्रीभंडारानकुन्नु तेल्लिकट्टु अच्छि

(९।) तमकु निष्टार्त्थसिद्धिगानु ई पुष्पतोंट फलवत्तुगां

जेसि इंदुल

(१०।) पुष्पवनमाललु प्रतिदिनमुन्नु तेच्चि श्रीनरसिहनाथुनिकि

चातिं-

(११।) च्चुटकु ई निवंद्धमु ई पुराइनायकुनिकि धारपोसि

ईच्चिरि ई धर्म्मं

(१२।) श्रीवैष्णव रक्ष श्री [।।]